विचार बिन्दु

अज्ञान जैसा शत्रु दूसरा नहीं। –चाणक्य

वनों और शब्दों से परे जीवन का उत्कर्ष

कई मित्र और सहयोगी प्रायः मुझसे पूछते हैं कि भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्ति के बाद मैं क्या करूंगा। सेवानिवृत्ति से पहले पूरी की जाने वाली प्राथमिकताओं पर भी प्रश्न पूछे जाते हैं। इन सवालों के उत्तरों से मैं प्रायः बचता रहा हूं। अब मैं इन्हें यहाँ संबोधित कर रहा हूँ।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बहुत लोग ऐसे पाए जाते हैं जो समान कुशलता से अनेक कार्य करने में सक्षम होते हैं। वे किसान, शिक्षक, प्रबंधक, नियामक, वैज्ञानिक, पत्रकार, लेखक, औषधि-विकासकर्ता,और भी बहुत कुछ एक साथ हो सकते हैं। असाधारण होने के लिए उन्हें सामान्य प्रयत्नों से आगे जाना होता है। ऐसा क्यों और कैसे होता है, इसे शब्दों में स्पष्ट कर पाना कठिन है। ऐसे लोगों की यात्रा पर स्पष्ट अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उनके साथ रहना व काम करना पड़ता है। ऐसे लोगों का जीवन-संघर्ष न तो आश्चर्यजनक होता और न ही किसी से छुपा रहता। उनके दिल और अंतर्मन में एक सतत ज्वाला धधकती है। वे सम्पूर्ण जीवन के हर क्षण का श्रेष्ठ निवेश करते हैं। ऐसे लोग आय या धन पर केन्द्रित संकीर्ण मनोस्थिति में नहीं फंसते। मानव उत्कर्ष बहुत निवेश मांगता है और बदले में कल्पना से भी अधिक प्रचुर मात्रा में प्रतिफल देता है। इस सबके लिए उत्तम मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य आवश्यक होता है। एक सार्थक जीवन और अडिग उद्देश्य, चरित्र और सद्गुण, और लचीले सामाजिक संबंधों की भी आवश्यकता होती है। वस्तुतः इसके लिए प्रज्ञा की आवश्यकता होती है और जिसके परिणामस्वरूप खुशी, जीवन-संतुष्टि और कल्याण प्राप्त होते हैं।

हर व्यक्ति की तरह मुझे भी प्रज्ञा को विकसित करते रहना होगा, क्योंकि यह मानव उत्कर्ष का एक अति-महत्वपूर्ण निर्धारक है। प्रज्ञा से प्रसन्नता प्राप्त होने की प्रबल आशा होती है क्योंकि प्रज्ञा प्रसन्नता की जननी है। अंग्रेजी के शब्द विजडम को भारतीय दर्शन और विज्ञान में बुद्धिमत्ता, मनीषा, मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी, ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता और समझ आदि के रूप में जाना जा सकता है। प्राचीन काल से दुनिया भर की संस्कृति और सभ्यताओं के धार्मिक और दार्शनिक साहित्य में प्रज्ञा अध्ययनों का एक गंभीर विषय रहा है। पिछले पाँच दशकों के दौरान साइंस ऑफ़ विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। वस्तुतः प्रज्ञा एक समठा, बहुआयामी व्यक्तित्व विशेषता है जो उत्तम कल्याण, जीवन में संतुष्टि और समठा रूप से बेहतर स्वास्थ्य और प्रसन्नता से जुड़ी है। मैंने जीवन में प्रज्ञावान बनने के लिए कई तंत्रों की स्वयं खोज किया है और उनका पालन करता हूँ। विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। सबसे पहले, समाजोन्मुखी व्यवहार या प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता, करुणा, सहानुभूति, परोपकारिता, और सभी के लिए निष्पक्षता की भावना आदि हैं। दूसरा, भावनात्मक नियमन या इमोशनल रेगुलेशन, जिसमें आत्म-नियंत्रण और उकसाए जाने पर भी अविचलित रहना है। तीसरा, आत्म-चिंतन, आत्म-समीक्षा, व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि और सीखने की क्षमता शामिल है। चौथा, वैचारिक विविधता व भिन्न दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णुता। पांचवां, अनिश्चितता के रहते हुये भी समय पर प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता। छठा, उचित सलाह देने में तत्परता या सोशलएडवाइजिंग, जीवन और सामाजिक निर्णय लेने का सामान्य ज्ञान, और अंत में, एक ऐसी मनोस्थिति जो दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता को गले लगाती है। इस बात पर मेरा दृढ़-विश्वास है और उसी के अनुसार कार्य भी करता हूं कि जिनके पास विद्वता, विचारशीलता, विज्ञान, स्मृति, तत्परता और क्रियात्मकता है, उनके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं है। मैं इस तथ्य की गहराई को भी समझता और पालन करता हूं कि वास्तव में प्रज्ञावान लोग शायद ही कभी ज्ञान के नशे में चूर होते हैं! छद्म-प्रज्ञा की बात अलग है। यह मनोस्थिति मेरे लिए सर्वोपरि है कि किसी के जीवन में मुस्कुराहट लाना जेब में लाखों डॉलर से कहीं अधिक बेहतर है। यहाँ वर्णित समग्र चिंतन ने मुझे वह बनाया, जो मैं हूं। इसने मुझे वह सब दिया, जो मेरे पास है।

मैं नदियों और पहाड़ियों के बीच बसे एक सुदूर गांव में पैदा हुआ था। स्वाभाविक है कि उस भू-परिदृश्य की कठिनाइयों और विशेषताओं का सामना करते हुए जीवित रहने की रणनीतियों को सीखना आवश्यक था। ऐसे गावों में आपको एक किसान, मजदूर, और साधारण इंसान होना पड़ता है जो जीवित रहने के लिए पारंपरिक कौशल सीखने के लिए तैयार हो। यहाँ का हर समाधान वैसा ही होता है जिसे विश्व आज प्रकृति-आधारित समाधानके नाम से जानता है। कोई आश्चर्य नहीं कि आवश्यकता हो तो मैं अपने खेतों में खेती कर सकता हूं। मैं अपने गाँव में तालाब बना सकता हूँ और आजीविका के लिए जलीय फसलों की खेती सकता हूँ। मैं अपनी बनाई हुई नाव में तेजी से बहने वाली नदी को पार करने में भी आपकी मदद कर सकता हूं। मैं मनुष्यों, पक्षियों, कीड़ों और अन्य प्राणियों की पीढ़ियों के कल्याणार्थ आम का बगीचा भी उगा सकता हूँ। मैं मिट्टी का घर बना सकता हूँ और बड़ी आसानी से पशुपालन कर सकता हूँ। और भी बहुत कुछ किया जा सकता है लेकिन यह सब इसलिए नहीं कि मैं नए सिरे से सब कुछ सीखने को तैयार हूं, बल्कि इसलिए कि वनों की ओर जाने से पहले मैंने अपने गांव में जीवित रहने के लिए ये सब किया था। अपने जीवन-काल में मैं यह कभी नहीं भूला कि कुछ जानना बड़ी बात है लेकिन कुछ करना उससे भी बड़ी बात है।

सेवानिवृत्ति सांसारिक निवृत्ति नहीं है। बाद के जीवन में भी सार्थक गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं। सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक और सामाजिक संबंध, लक्ष्यों को तय कर पूरा करना, व्यायाम व पसंदीदा खेल, प्रकृति-अनुभव, आध्यात्मिकता, बौद्धिक उपलब्धि, लोगों के चेहरे पर स्वास्थ्य की मुस्कान और धरती के चेहरे पर हरियाली की मुस्कान लाने जैसी व्यापक गतिविधियां वृद्धावस्था में भी जीवन की सार्थकता और उत्कर्ष को बनाये रखती हैं।

आगे भी देखें तो मई 2023 में अपनी सेवानिवृत्ति के तुरंत बाद मैं उस आयुर्वेद के शिक्षण पर ध्यान दे सकता हूँ जो मैंने स्वयं 18 साल की उम्र से पहले सीखा था। मैं नई पीढ़ी के युवाओं को यजुर्वेद का विधिवत सस्वर पाठन भी सिखा सकता हूं। दुनिया भर के कुछ सबसे प्रसिद्ध संस्थानों में वानिकी, पर्यावरण-शासन और सस्टेनेबिलिटी साइंस पढ़ाने का आमंत्रण मेरे लिए सदैव उपलब्ध है। यह सब इसलिए नहीं कि मैं नए सिरे से सीखकर कुछ भी करने को तैयार हूं, बल्कि इसलिए कि मैंने समय-समय पर भारतीय वन सेवा में रहते हुए भी ऐसे विविध कार्यों का आनंद लिया है। मैं पहले भी देश के महत्वपूर्ण संस्थान में प्राध्यापक रहा हूं, और आज भी राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में अतिथि प्राध्यापक हूं। ऐसी गतिविधियों से हम लोगों के कौशल को बढ़ा कर उनके चेहरे पर ऐसी मुस्कान ला सकते हैं जो उन्हें समाज के लिए अधिक उपयोगी बना सकती है।

ज्ञान के दान से बड़ा कोई दान नहीं है! वानिकी, वन और आजीविका, वन-सुशासन, पर्यावरण प्रबंध आदि पर काम करने वाली विश्व के श्रेष्ठ संस्थाओं में एक बार पुनः वैज्ञानिक के रूप में काम करना मुझे हमेशा अच्छा लगेगा। जमीनी स्तर पर काम करने के साथ-साथ अनुभव और विज्ञान के आधार पर विश्व की अनेक सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं के प्रकृति-आधारित समाधानपर नवीन ज्ञान उत्पन्न करना आज भी मेरा जुनून बना हुआ है। मैं अत्याधुनिक और सुप्रसिद्ध प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया घरानों में एक पत्रकार के रूप में भी काम करने का आनंद ले सकता हूं। असल में वर्ष 1975 के आसपास पत्रकारिता से मेरी पहली कमाई आई थी!

वन प्रबंधक के रूप में वनों और संरक्षित क्षेत्रों की रक्षा, प्रबंधन, पुनर्स्थापन और पुनर्वन्यकरण में योगदान तो मेरे लिए सहज है ही, क्योंकि सीखने और क्रियान्वयन की यह मनोहारी प्रक्रिया मेरे जीवन का एक प्रमुख हिस्सा रही है। पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य में सुधार के साथ ही प्रकृति-आधारित औषधियां और निवारक रणनीतियां विकसित कर लोगों के स्वास्थ्य में सुधार भी किया जा सकता है। ऐसा करके मानवता को कुछ सबसे कठिन बीमारियों से बचा सकते हैं।

हमारे पास जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए शमन और अनुकूलन विकल्पों की बहुतायत है लेकिन उन्हें लागू करने के लिए पर्याप्त राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी है। कॉर्पोरेट घरानों में पर्यावरण-शासन, पर्यावरण अनुपालन और नियामक वातावरण में सुधार करना, ताकि वे अनिवार्य नियमों का पालन करने में सक्षम हो सकें, भी मेरे लिए प्रसन्नतादायक कार्य होगा। इसमें कई ऐसे सक्रिय कदम शामिल होंगे जो एक ओर उद्योग को प्रतियोगियों के मध्य बढ़त प्रदान कर सकेंगे और दूसरी ओर जल, वायु, पर्यावरण और जैव-विविधता के संरक्षण में सहायक होंगे। जलवायु परिवर्तन की स्थिति से निपटने में औद्योगिक घरानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कार्य में वानिकी और पर्यावरण प्रबंध दोनों का ही योगदान हो सकता है।

आइए अब प्राथमिकताओं पर चलते हैं। भारतीय वन सेवा में विभिन्न पदों पर एक परम संतुष्टिदायक कैरियर के साथ प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन बल के प्रमुख) के रूप में कार्यभार ठाहण करने के तुरंत बाद, निर्धारित नियमित कार्यों के अलावा, तय की गई पाँच प्राथमिकताएँ अब पूरी हो रही हैं। पहला, बड़ी संख्या में पद रिक्त होने के कारण वन विभाग जमीन पर लगभग आधे अधिकारियों के साथ कार्य कर रहा था। विभाग में भर्तियां हुई हैं और शीघ्र ही पूरी हो रही हैं। अगले दशक के दौरान पूरी क्षमता से कार्य करने के लिए सभी पदों पर नियुक्ति की जा रही है। दूसरा, फील्ड स्टाफ विभिन्न कारणों से 3-4 वर्षों तक अपनी पदोन्नितयों से वंचित रहा। अब यह प्रक्रिया पूरी हो रही है। एक रैंक जिसमें अभी पदोन्नित होना है, जल्द ही पूरी होने वाली है। तीन, नई बाह्य-सहायता प्राप्त परियोजनाओं के माध्यम से हमारे पास वनों, वन्य-जीवन और जैव-विविधता के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन, और स्थानीय समुदायों की आजीविका में सुधार के लिए निवेश हेतु 3600 से 4500 करोड़ रुपये का संसाधन होगा। चार, अच्छा कार्यक्रम कार्यान्वयन एक ज्ञान-गहन यात्रा है जिसके लिए मजबूत साक्ष्य-आधार की आवश्यकता होती है। हमने पूरे राज्य में अब पुनर्स्थापन और पुनर्वन्यकरण के लिए अत्याधुनिक वैज्ञानिक और अनुभवजन्य ज्ञान का एकीकरण कर सभी साथियों तक पहुँचाया और कियान्वयन प्रारंभ कराया है। इसी के साथ कम से कम 10 नए कंसर्वेशन रिजर्व, एक और लेपर्ड रिजर्व, और एक नया बाघ संरक्षित क्षेत्र अस्तित्व में आ चुके हैं। शीघ्र ही एक और बाघ संरक्षित क्षेत्र घोषित हो सकता है। इस प्रकार, वन विभाग के पास अगले 10 वर्षों के लिए कार्य करने हेतु वन बल, संसाधन और ज्ञान उपलब्ध होगा। उल्लेखनीय है कि यह वही समय होगा जिसे संयुक्त राष्ट्र के पारिस्थितिक तंत्र पुनर्स्थापन दशक (2021-2030) के रूप में घोषित किया गया है। पांचवीं प्राथमिकता पूरा होना शेष है, लेकिन उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अभी छह महीने हैं। आशा है कि राजस्थान सरकार के सहयोग और सरकार और वन विभाग में सहयोगियों की पूर्ववत् मदद से हम कर्मचारियों और अधिकारियों की लंबे समय से लंबित कई उचित मांगों को हल करने में सक्षम होंगे।

जीवन की सार्थकता एक जटिल अवधारणा है जिसमें जीवन के बोधगम्य और सुसंगत होने, उद्देश्य और दिशा तय होने, वैयक्तिक अस्तित्व समाज के लिए वांछित होने के साथ-साथ सामाजिक स्नेह और जीने-योग्य जीवन शामिल हैं। जीवन की सार्थकता शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से भी संबंधित है, जिसमें दीर्घायु में वृद्धि और रुग्णता में कमी शामिल है। सेवानिवृत्ति सांसारिक निवृत्ति नहीं है। बाद के जीवन में भी सार्थक गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं। सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक और सामाजिक संबंध, लक्ष्यों को तय कर पूरा करना, व्यायाम व पसंदीदा खेल, प्रकृति-अनुभव, आध्यात्मिकता, बौद्धिक उपलब्धि, मनोहारी स्थलों की यात्रा और प्रज्ञा सुदृढ़ करना, लोगों के चेहरे पर स्वास्थ्य की मुस्कान और धरती के चेहरे पर हरियाली की मुस्कान लाने जैसी व्यापक गतिविधियां वृद्धावस्था में भी जीवन की सार्थकता और उत्कर्ष को बनाये रखती हैं। यह लेखा-जोखा आपको वनों और शब्दों से परे जीवन का उत्कर्ष दर्शित करता है। इन चर्चाओं के लिए हम मिलते रहेंगे!

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

देश के आदरणीय टोल फ्री

- हर टोल नाके पर टैक्स नहीं देने वाले माननीय की सूची देखकर मन उद्वेलित हो उठता है
- प्रायः सभी सरकारी वाहनों को भी टोल फ्री गली से निकाला जा रहा है जो गलत है
- जनता में मैसेज यह जा रहा है कि टोल नहीं देना, देश में बड़े आदमी होने का सूचक है

डॉ. कैलाश सोडाणी

मैं जब भी राष्ट्रीय राज मार्ग से यात्रा करता हूं तो सड़कों की क्वालिटी पर गर्व होना स्वाभाविक है। परन्तु टोल नाकों पर आदरणीय महानुभावों की एक टोल मुक्त सूची को देखकर मन व्यथित हो जाता है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे राजनेता का विजन और श्री नितिन गडकरी जैसे मंत्रियों की मेहनत एवं लगन से आज देश में हजारों कि.मी. चमचमाती सडकों ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को जबरदस्त गति प्रदान की है। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा निर्मित फोर-लेन, सिक्स-लेन, एक्सप्रेस हाई-वे से यातायात, कृषि, उद्योग, पर्यटन, आदि सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखाई दे रहा है। आधुनिक युग में विकास की गंगा का मार्ग नवनिर्मित सड़के ही हैं। पिछले दो दशकों में सड़कों और वाहनों की क्वालिटी एवं क्वांटिटि में जो सुधार हुआ है, उससे देश की ही नहीं अपितु प्रत्येक नागरिक की गति में भी उल्लेखनीय अभिवृद्धि हुई है । यात्रा सुखद, सुगम एवं सुरक्षित हुई है। सड़क दुर्घटनाऐं तेजी से कम हो रही हैं।

टोल टेक्स के माध्यम से सड़क निर्माण का विचार बहुत सफल रहा है। सरकारों के बजट से सड़कों का इतना बड़ा नेटवर्क खड़ा करना नामुमकिन था। एक अच्छी बात यह भी है कि इस व्यवस्था में प्राधिकरण टोल टेक्स केवल उन्ही से वसूल रहा है जो सड़क का उपयोग कर रहे हैं। जब कि प्रायः सरकारों को राजस्व देने वाले और उसके उपयोगकर्त्ता में कोई संबंध नहीं होता है। इसलिए इस प्रकार का कर देने में कर देने वाले को प्रायः सुखद अनुभुति नहीं होती है। हमारे देश में जिस प्रकार का प्रशासनिक सिस्टम है, लालफीताशाही है, कार्य करने के वातावरण का अभाव है फिर भी राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने जो काम कर के दिखाया है, निःसन्देह प्रशंसनीय है। प्राधिकरण के इंजिनियर्स को देशवासियों का सलाम।

परन्तु प्राधिकरण के एक महत्वपूर्ण निर्णय से हम सहमत नहीं हैं। हर टोल नाके पर ऐसे माननीय लोगों की सूची एक बड़े बोर्ड पर उल्लेखित है जिन्हें टोल टेक्स से मुक्त कर रखा है, उनमें महामहिम राष्ट्रपति, उप- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, न्यायाधीश, सांसद, विधायक, बड़े प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित हैं। इन सभी आदरणीय महानुभावों को टोल फ्री करने के पीछे प्राधिकरण का मंतव्य समझ में नहीं आया। मेरा मानना है प्राधिकरण की इस व्यवस्था से समाज को अच्छा मैसेज नहीं जा रहा है। वैसे भी इन सभी के पास सरकारी वाहन ही होते हैं, टोल देने पर भी इनकी स्वयं की जेब से तो कुछ नहीं जाना है। यह भी सम्भव है कि इन आदरणीय महानुभावों को इस व्यवस्था की जानकारी भी नहीं हो। फिलहाल जनता में मैसेज यह जा रहा है कि टोल नहीं देना, देश में बड़े आदमी (वी.आई.पी.) होने का सूचक है। यह टोल देने वाले अनुशासित नागरिकों की इंसल्ट है। जिसके टोल देने से ही तो सड़के बन रही हैं, इस प्रकार का बोर्ड लगाकर उसे अपमानित करना न्यायसंगत नहीं है। अनेक महानुभाव बड़े आदमी बनने की लालसा में टोल नाकें पर झूठे-सच्चे विजिटिंग कार्ड दिखाकर टोल मुक्त होने का प्रयास करते हैं, हास्यास्पद स्थिति तो यह है कि यदि किसी कारण से वे सफल हो जाते हैं तो उन्हें अपनी इस कारस्तानी पर गर्व का भी अनुभव होता है।

विषय चल रहा है तो यह भी बताना चाहूँगा कि टोल मुक्त सूची के अतिरिक्त प्रायः सभी सरकारी वाहनों को भी टोल फ्री गली से निकाला जा रहा है जो गलत है। टोल चुकाने की स्थिति में नाके पर वाहन का इन्द्राज हो जाता है जिससे सरकारी वाहनों का दुरूपयोग रूकेगा। वाहन में विराजमान सरकारी अधिकारी को बड़े आदमी की गलतफहमी भी नहीं होगी। जब आयकर आम नागरिक से लेकर महामहिम तक सभी सरकारी खजानें में जमा करा रहे हैं तो फिर टोल से मुक्ति क्यों? यह अलग बात है कि सांसद एवं विधायकों ने आयकर से थोड़ी-बहुत मुक्ति के लिए वेतन में अभिवृद्धि के स्थान पर सुविधाओं में वृद्धि का द्वार खोल रखा है। वेतन आयकर की परिधि में है परन्तु सुविधाओं के लिए मिलने वाली राशि पर आयकर नहीं लगता है। सरकारी खजाने से सुविधाओं के नाम पर वेतन से अधिक राशि का भुगतान प्राप्त करने का गौरव राजनीतिज्ञों ने केवल अपने लिए ही आरक्षित कर रखा है। मेरा मानना है टोल फ्री की व्यवस्था से हमारे जनप्रतिनिधियों की समाज में प्रतिष्ठा घटती है उससे अन्ततः देश का प्रजातंत्र कमजोर होता है। प्राधिकरण के लिए यह बहुत छोटा सा काम है कि वह अपनी नियमावली में परिवर्तन करते हुए टोल फ्री की व्यवस्था को तत्काल प्रभाव से समाप्त करें एवं अनुशासित भारत के निर्माण मे सहभागी बने।

–डॉ. कैलाश सोडाणी,
कुलपति, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

हाईकोर्ट : 'याचिकाकर्ता को नियुक्ति दें अन्यथा कॉलेज शिक्षा संयुक्त निदेशक हाजिर हों'

- कॉलेज शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य के 34 पदों में से एक विशेष योग्यजन के लिए आरक्षित था
- आयुक्तालय, कॉलेज शिक्षा विभाग जयपुर ने उत्तर प्रदेश का मूल निवासी होने पर नियुक्ति नहीं दी
- अगली सुनवाई 15 दिसम्बर को

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश के मूल निवासी होने के आधार पर सहायक आचार्य (गणित) पद पर विशेष योग्यजन वर्ग में नियुक्ति नहीं दिए जाने के मामले को गंभीरता से लिया है। इसमें अब अगली सुनवाई 15 दिसम्बर को होगी। इटावा उत्तर प्रदेश के निवासी है याची मनीष चौहान।

याची मनीष चौहान की ओर से अधिवक्ता यशपाल ख़िलेरी ने रिट याचिका पेश कर बताया कि राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर ने कॉलेज शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य के पदों के लिए विज्ञिप्त जारी कर योग्य अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित किए। गणित विषय में कुल 34 पद विज्ञापित किए जिसमें एक पद हियरिंग इंपेयर्ड वर्ग एच 1 के विशेष योग्यजन के लिए आरक्षित किया।

याची एमएससी (गणित), पीएचडी, जेआरएफ, स्लेट परीक्षा पास की योग्यता रखते हुए अपना आवेदन वर्ग में किया। आयोग द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा में कुल 48.47 अंक हासिल किए और पास घोषित किया गया। तत्पश्चात आयोग ने याची को साक्षात्कार में बुलाया। याची के सभी दस्तावेज़ सत्यापन पश्चात् उसे अंतिम रुप से चयनित करते हुए आयोग ने कॉलेज शिक्षा विभाग को उसका नाम नियुक्ति के लिए भेजा गया। तत्पश्चात आयुक्तालय, कॉलेज शिक्षा विभाग, जयपुर द्वारा काउंसलिंग में बुलाया गया। याची ने समस्त मूल दस्तावेज़ जमा करवा दिए लेकिन अन्य सभी अभ्यार्थियों को नियुक्ति पत्र जारी कर दिए लेकिन याची को बिना किसी कारण के नियुक्ति से यह कहते हुऐ मना कर दिया कि वह उत्तर प्रदेश का मूल निवासी है और विशेष योग्यजन वर्ग में नियुक्ति नहीं दी जा सकती है। जिस पर याची ने हाईकोर्ट में चुनौती दी। याची की ओर से बताया गया कि दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 और राजस्थान दिव्यांगजन अधिकार नियम, 2018 के प्रावधानों के अनुसार विशेष योग्यजन वर्ग में किसी अन्य राज्य का मूल निवासी होने के आधार पर नियुक्ति से वंचित नही किया जा सकता है। जबकि विज्ञिप्त में भी स्पष्ट लिखा गया था कि संपूर्ण भारत के किसी भी राज्य के सक्षम अधिकारी द्वारा जारी विकलांगता प्रमाण पत्र मान्य होगा। नियमानुसार दिव्यांगजन व्यक्ति को मूल निवासी होने के आधार पर नियुक्ति से वंचित करना संविधान के प्रावधानों के विपरीत है।

पापी पेट के लिए मासूम दिखा रही जोखिम भरा करतब

जान जोखिम में डालकर करतब दिखाती छोटी बच्ची।

अजमेर, (कासं)। अपना पेट भरने के लिए और परिवार का पेट भरने के लिए छोटी सी बच्ची ने केकड़ी में जगह-जगह करतब दिखाए। अपनी जान जोखिम में डालकर बच्ची एक पैर से रस्सी पर चल रही है। घूम-घूम कर यह बच्चे और परिवार जगह जगह करतब दिखाकर अपना पेट भरते हैं। जनता से जो पैसा मिलता है उसी से यह परिवार अपना पेट भरते हैं। क्या सरकार इन बच्चों को या इन परिवारों को कोई सुविधाएं नहीं देती है। जिस उम्र के बच्चों को पढ़ाई करनी चाहिए और वे सड़कों पर घूम रहे हैं। जिन्हें शिक्षा मिलनी चाहिए। वे रस्सी पर अपना करतब दिखा रहे हैं। ये बच्चे भी देश का भविष्य है। आखिर कौन सुनेगा इन बच्चों की पुकार।

उदयपुर में जी-20 शेरपा बैठक के सफल आयोजन पर प्रधानमंत्री ने पीठ थपथपाई

उदयपुर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में उदयपुर में हुए जी-20 शेरपा बैठक के सफल आयोजन पर यहां की गई व्यवस्थाओं की सराहना की है और प्रशासन की पीठ थपथपाई है। प्रधानमंत्री वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जी-20 से संबंधित पहलुओं पर चर्चा के लिए राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों और केंद्र शासित प्रदेशों के उप-राज्यपालों के साथ वीडियो बैठक की अध्यक्षता करते हुए समीक्षा कर रहे थे। बैठक में राज्य के राज्यपाल कलराज मिश्र एवं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी उपस्थित थे।

पीएम की वर्चुअल बैठक में मौजूद सीएम अशोक गहलोत व अन्य।

इस दौरान प्रधानमंत्री ने उदयपुर में आयोजित प्रथम जी-20 शेरपा बैठक का उदाहरण देते हुए सभी जी-20 आयोजनों को डॉक्युमेंटेशन करने के निर्देश दिए ताकि इसका आगे भी उपयोग किया जा सके। उदयपुर प्रशासन द्वारा यहाँ की गई व्यवस्थाओं का डॉक्युमेंटेशन भी उच्च स्तर पर भेज गया है। प्रधानमंत्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत की जी-20 अध्यक्षता पूरे देश से जुड़ी थी और यह देश की क्षमता व्यक्त करने का एक अनूठा अवसर था।

प्रधानमंत्री ने टीमवर्क के महत्व पर जोर दिया और विभिन्न जी-20 आयोजनों में राज्यों/संघ शासित प्रदेशों से सहयोग की अपील की।

भारत की जी 20 अध्यक्षता के दौरान बड़ी संख्या में भारत आने वाले आगंतुकों और विभिन्न आयोजनों पर अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के केन्द्रित होने पर प्रकाश डालते हुए, प्रधानमंत्री ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से इस अवसर का उपयोग करते हुए स्वयं को आकर्षक व्यवसाय, निवेश और पर्यटन स्थलों के रूप में पुनः प्रस्तुत करने के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने संपूर्ण-सरकार और संपूर्ण-समाज दृष्टिकोण द्वारा जी-20 आयोजनों में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने की आवश्यकता को भी दोहराया। विदेश मंत्री ने भी इस बैठक के दौरान अपना संबोधन दिया और भारत के जी-20 शेरपा ने एक प्रस्तुति दी। इस मौके पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि आजादी से लेकर आज तक सभी प्रधानमंत्रियों ने भारत के विकास में अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि जी-20 की अध्यक्षता देश के लिए गौरव की बात है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जी-20 देश की संस्कृति को वैश्विक स्तर पर दिखाने के लिए यह एक बड़ा मंच है। बैठक में केन्द्र सरकार द्वारा जी-20 समिट के आयोजन पर दिए गए प्रस्तुतीकरण में राजस्थान सरकार द्वारा उदयपुर में जी-20 शेरपा बैठक के दौरान की गई व्यवस्थाओं, आतिथ्य, स्थानीय व्यंजनों तथा शेरपाओं के पारम्परिक राजस्थानी तौर-तरीकों से किए गए स्वागत के लिए आभार व्यक्त किया गया।

आयोजन के दौरान शेरपाओं ने राजस्थान में डिजिटल लेन-देन में सूचना प्रौद्योगिकी के बेहतरीन प्रयोग की प्रशंसा की। बैठक में राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र, गृहमंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर एवं विभिन्न राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री और लेफ्टीनेंट गवर्नर उपस्थित रहे।

राशिफल रविवार 11 दिसम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 8:36 तक, ब्रह्म योग सोमवार प्रातः 5:14 तक, विष्टि करण सांय 4:15 तक, चन्द्रमा दिन 1:52 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवि पुष्य योग रात्रि 8:36 से सूर्योदय तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 8:36 से आरम्भ होगा। भद्रा सांय 4:15 तक रहेगी। आज सौभाग्य सुंदरी व्रत, चतुरथी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 8:13 पर होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 8:36 से 9:45 तक, लाभ-अमृत 9:45 से 12:20 तक, शुभ 1:37 से 2:55 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:09, सूर्यास्त 5:30

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव दूर होगा। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
व्यक्तिगत कारणो से भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धन प्राप्त होगा। महत्वपूण कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कन्या
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
अपनी योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

कुंभ
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मीन
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। महत्वपूण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।